UGC APPROVED JOURNAL - 47746
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 01 | January – March 2018

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में लिंग, वर्ग एवं क्षेत्र के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

समशाद अली
(शोध छात्र)
मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

सारांश

शिक्षा बालक की सर्वांगीण उन्नति का अति उत्तम साधन है। विद्या बालक की अन्तर्निहित शक्तियों को उभारकर उन्हें पूर्ण विकसित करती है, जिसके प्रकाश में बालक स्वयं अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है और समाज को भी लाभ पहुंचाता है। बालक का मनोविज्ञान उसके अन्दर निहित विशिष्ट क्षेत्र की प्रतिभा की ओर इंगित करता है। बालक को यदि सही मार्गदर्शन मिले तो उसकी शैक्षिक उपलब्धि का स्तर अत्यन्त ऊँचा हो जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्ता ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में लिंग (छात्र/छात्रा), वर्ग (कला/विज्ञान), क्षेत्र (शहरी/ग्रामीण) के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन हेतु मेरठ जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के 480 विद्यार्थियों (80 छात्र + 80 छात्रा = 160), (80 कला वर्ग + 80 विज्ञान वर्ग = 160), (80 ग्रामीण + 80 शहरी = 160) का चयन यादृच्छिकी न्यादर्श चयन विधि द्वारा किया गया। प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता ने शैक्षिक उपलब्धि को मापने के लिए उनके गत वर्षों के अंकों के औसत आधार बनाया गया। प्रदत्त संकलन हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया। निष्कर्ष रूप में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में लिंग, वर्ग एवं क्षेत्र के आधार पर सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ।

मुख्य शब्दः– उच्च माध्यमिक, शैक्षिक उपलब्धि, लिंग, वर्ग एवं क्षेत्र।

1. प्रस्तावनाः–

शिक्षा बालक की सर्वांगीण उन्नति का अति उत्तम साधन है। विद्या बालक में अन्तर्निहित शक्तियों को उभारकर उन्हें पूर्ण विकसित करती है, जिसके प्रकाश में बालक स्वयं अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है और समाज को भी लाभ पहुँचाता है। विद्या बालक के व्यवहार का परिष्कार करती है। यह परिष्कार बालक और समाज दोनों के लिए उपयोगी होती है। प्राचीन काल में शिक्षा का अर्थ बालक के मस्तिष्क को ज्ञान से भरना था। उस समय शिक्षा बाल केन्द्रित न होकर ज्ञान केन्द्रित थी, किन्तु वर्तमान में विद्या की धारणा परिवर्तित हो गयी है। आज हम शिक्षा का प्रयोग नए अर्थ में करते हैं जो पुराने में सर्वथा भिन्न और वैज्ञानिक है।

UGC APPROVED JOURNAL - 47746

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 01 | January – March 2018

आज शिक्षा का उद्देश्य बालक के वर्तमान का निर्माण करना है, बालक के जीवन की प्रत्येक अवस्था में उसके अभिवर्द्धन और विकास में सहयोग करना है। शिक्षा प्रक्रिया में छात्र अब एक सक्रिय केन्द्र बिन्दु माना जाता है। शिक्षक का स्थान एक सहायक एवं पथ–प्रदर्शक के रूप में माना जाता है। शिक्षा बालक को नए–नए अनुभवों से अवगत कराती है तथा वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने में सहायता देती है। शिक्षण प्रक्रिया में अध्यापक के लिए यह जानना जरूरी है कि विद्यार्थी किस शैली के प्रति उसका व्यक्तित्व, उसकी अध्ययन आदतें, उसकी रूचियाँ किस प्रकार की शिक्षण को सबसे अधिक सहयोग देती हैं। छात्र जिस शिक्षण को अपने लिए अनुकूल अनुभव करता है उसी शैली के माध्यम से उसकी अधिगम–प्रक्रिया को सही दिशा प्रदान की जा सकती है।

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सम्बन्धी अनेक शोध कार्य हुए हैं। जसोत्मनयी, ए० (2002) ने अपने शोध कार्य में प्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया। मर्चेजी, ए० मार्टिन (2008) ने अपने शोध कार्य में पाया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि शैक्षिक प्रक्रिया पर निर्भर करती है। कुमार, सुशील (2008) ने शैक्षिक निष्पत्ति का अध्ययन लिंग, सामाजिक स्थिति और निवास स्थान के आधार पर किया। सिंह, रणविजय (2009) ने माध्यमिक स्तर पद छात्रों की सृजनशीलता, समायोजन क्षमता, अध्ययन आदतों तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि को मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन किया। हंसराज एवं दिव्य, शिखा (2011) ने कक्षा 10 के छात्रों की अधिगम क्षमता व उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव नामक विषय पर शोध किया। सक्सेना, राजेश (2009) ने 10वीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति एवं उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में तुलनात्मक अध्ययन किया। चतुर्वेदी, शोभा (2009) में उच्च निष्पत्ति और साधारण बुद्धि–लब्धि वाले बालकों के लिए निर्देशन की आवश्यकता तथा शैक्षिक निष्पत्ति का अध्ययन किया।

2. अध्ययन का उद्देश्यः–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में लिंग (छात्र/छात्रा) के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में वर्ग (कला/विज्ञान) के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

3. शोध परिकल्पनाः–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में लिंग (छात्र/छात्रा) के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।

UGC APPROVED JOURNAL - 47746
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 01 | January – March 2018

2. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में वर्ग (कला/विज्ञान) के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।

3. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।

4. <u>प्रतिदर्शः</u>–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु मेरठ जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के कुल 480 विद्यार्थियों (80 छात्र + 80 छात्रा = 160), (80 कला वर्ग + 80 विज्ञान वर्ग = 160), (80 ग्रामीण + 80 शहरी = 160) का चयन यादृच्छिकी न्यादर्श चयन विधि द्वारा किया गया। इन विद्यार्थियों को वर्ग, लिंग एवं क्षेत्र के आधार पर विभाजित किया गया। शोधकर्त्ता द्वारा चयनित न्यादर्श का वितरण सारणी–1 में प्रस्तुत है–

सारणी–1

न्यादर्श का वितरण

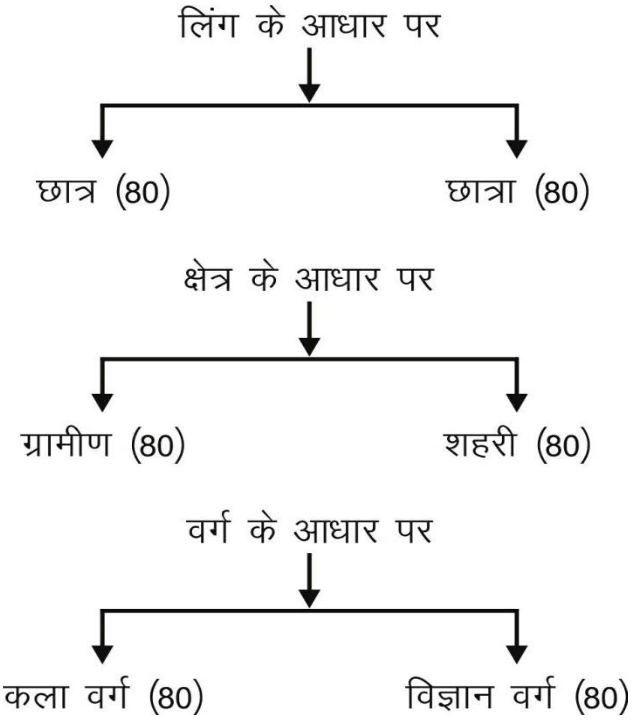

5. <u>शोध उपकरणः</u>–

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने शैक्षिक उपलब्धि को मापने के लिए गत वर्षों के अंकों के औसत को आधार बनाया गया।

6. <u>प्रदत्त संग्रहः</u>–

UGC APPROVED JOURNAL - 47746
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 01 | January – March 2018

प्रस्तुत शोध में प्रदत्त संकलन हेतु सर्वेक्षण की विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया।

7. प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ:–

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ इस प्रकार हैं–

A. $$M = \frac{\Sigma x}{N}$$

B. $$S.D.(\sigma) = \sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2} \times c.i.$$

C. $$t = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}}$$

8. प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या:–

प्रयुक्त विधियों एवं प्रविधियों के अनुसार आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिणामों का आंकलन इस प्रकार है–

1. प्रस्तुत अध्ययन का पहला उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में लिंग (छात्र/छात्रा) के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना प्रस्तावित था। उक्त वर्गीकरण को सारणी–2 में प्रस्तुत किया गया है–

सारणी–2

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में लिंग के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	स्वतंत्रांश संख्या	सार्थकता
छात्र	80	61.47	6.29	0.91	179	सार्थक अन्तर नहीं
छात्रा	80	57.98	8.12			

व्याख्या–

तालिका में उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन 61.47 (6.29) प्राप्त हुआ है जबकि उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 57.98 (8.12) प्राप्त हुआ है। जबकि दोनों के मध्य क्रांतिक अनुपात का मान 0.91 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रांतिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि दोनों समूहों की शैक्षिक उपलब्धि में लिंग के आधार पर सार्थक अन्तर स्वीकृत नहीं पाया गया। इस आधार पर परिकल्पना 1 स्वीकृत हुयी।

UGC APPROVED JOURNAL - 47746

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 01 | January – March 2018

2. प्रस्तुत अध्ययन का दूसरा उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में वर्ग (कला वर्ग/विज्ञान वर्ग) के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना प्रस्तावित था। उक्त वर्गीकरण को सारणी–3 में प्रस्तुत किया गया है–

सारणी–3

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में वर्ग के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	स्वतंत्रांश संख्या	सार्थकता
कला वर्ग	80	59.71	6.92	0.97	179	सार्थक अन्तर नहीं
शहरी वर्ग	80	59.73	7.98			

व्याख्या–

तालिका में उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन 59.71 (6.92) प्राप्त हुआ है, जबकि उच्च माध्यमिक स्तर की विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 59.73 (7.93) प्राप्त हुआ है, जबकि दोनों के मध्य क्रांतिक अनुपात का मान 0.97 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रांतिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि दोनों समूहों की शैक्षिक उपलब्धि में वर्ग के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इस आधार पर परिकल्पना 2 स्वीकृत हुयी।

3. प्रस्तुत अध्ययन का तीसरा उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना प्रस्तावित था। उक्त वर्गीकरण को सारणी–4 में प्रस्तुत किया गया है–

सारणी–4

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में क्षेत्र के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

UGC APPROVED JOURNAL - 47746
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 01 | January – March 2018

क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	स्वतंत्रांश संख्या	सार्थकता
ग्रामीण	80	59.81	7.51	0.70	179	सार्थक अन्तर नहीं
शहरी	80	63.32	5.73			

व्याख्या–

मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात को तालिका संख्या 4.9 में मेरठ जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में क्षेत्र के आधार पर दर्शाया गया है। तालिका में उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन 59.81 (7.51) प्राप्त हुआ है, जबकि उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 63.32 (5.73) प्राप्त हुआ है। जबकि दोनों के मध्य क्रांतिक अनुपात का मान 0.70 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रांतिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है दोनों समूहों की शैक्षिक उपलब्धि में क्षेत्र के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इस आधार पर परिकल्पना स्वीकृत हुयी।

9. <u>शैक्षिक निहितार्थः</u>–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को वर्ग (कला/विज्ञान), लिंग (छात्र/छात्रा), क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) के आधार पर उनकी अध्ययन आदतों, अधिगम शैली एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अध्ययन को दर्शाया गया है। आज का विद्यार्थी अध्ययन से दूरी बनाने का प्रयास करता रहता है, जिससे कारण उसकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती रहती है। विद्यार्थियों को सदैव शिक्षण सम्बन्धी छोटी–छोटी तकनीकों का सहारा लेना चाहिए। जब विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें व अधिगम शैली प्रभावशाली होगी तब विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भी प्रभावित होगी।

REFERENCES

1. Ahuja, Pramila (1970): "Improving Professional Qualitive of Teachers, Educational Review", 76 (III), Nov. 1970, 256-258 (I.E.A., Vol. 16, 1970-71)
2. Arora, Kamla (1978): "Difference between Effective and Ineffective Teachers", New Delhi, S. Chand and Co.
3. Ary, Donald, et al. (1979): "An Introduction toResearch in Education", New York, Holt. Rinehart and Winston.

4. Arif, H.N. (1977): “The Effect of Accommodating Students Bearing Styles on Academic Achievements and Attitude Towards Algebra, Distt. Int”, Oct. 58(4)

5. Buch, M.B. (Edu) (1979): “Second Survey of Research in Education”, Baroda Society for Educational Research and Development.

6. Bhandarkar, K.M. (2006): “Statistice in Education”, Hyderabad, Neel Kamal Publications Private Limited.

7. Garret, Henery E. (1978): “Statistic in Psychology and Education”, Hudhiand : Kalyani Brothers.

8. Guilford, J.P. and B. Fruchter, (1978): “Fundamental Statistice in Psychology in Education”, Tokyo: McGraw Hill Kogapucha Pvt. Ltd.